

gen lassen M. 8, 396. वस्त्रेणैव वासया मन्मना शुचिम् RV. 1, 140, 1. गव्या वस्त्रेण वासयन्त इत् 8, 1, 17. ँ. G. 1, 19, 11. L. 2, 6, 1. यद्वाभिर्वा-सयिष्यसे wenn du in Milch dich kleiden willst RV. 9, 2, 4. यदी गोभिर्वसयते (aus metrischen Rücksichten) 14, 3. कदा स्तोमं वासयो ऽस्य राया 6, 33, 1. तं गोभिर्वसयामसि 9, 33, 5. 43, 1. वासित = वस्त्रच्छन्न H. a. n. 3, 295. fg.

— अधि anziehen: उताधि वस्ते सुभगा मधुवर्धम् RV. 10, 73, 8. — Vgl. 2. अधिवास und अधिवास.

— अनु bekleiden, umfassen, (schützend) umgeben: सोमस्त्वा राजामृते-नानु वस्ताम् RV. 6, 73, 18. इतिवास्मां अनु वस्ता वृतेन AV. 7, 27, 1. प्राणः प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव 14, 4, 10. 13, 3, 11. sich bekleiden Çāṅkh. Br. 23, 15. Pār. G. 3, 4.

— अभि sich hüllen in: यथात्तरिन् मातरिश्वाभिर्वस्ते Kauç. 98. — caus. bekleiden, bedecken: पिता पत्नीमभि द्विपैरवासयत् RV. 1, 160, 2. 9, 73, 5. गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि 104, 4. भस्मना TS. 2, 6, 3, 4. TB. 3, 2, 8, 7. Çat. Br. 1, 2, 2, 16. fg. Kāt. Çr. 2, 3, 25.

— उप s. उपवासन.

— नि anziehen über ein anderes Gewand Kāt. Çr. 15, 3, 12. umthun, anlegen: (खड्गेन) अर्थं वाससङ्क्रान्ता निवस्य (so die ed. Bomb. und N. 10, 19) च MBh. 3, 2351. R. Gorr. 2, 99, 2. वासोभिर्वक्रसाकृत्त्रैर्वो वै निवसितः पुरा gekleidet in 108, 32. sich kleiden, sich aufputzen: न्यवसिष्ट ततो ऋष्टुं रावणम् BH. 13, 7. निवद्धम् 3, 44. — Vgl. 2. निवसन, 2. निवास, 2. निवासिन्. — caus. anziehen: वासः MBh. 3, 2631. R. ed. Gorr. 2, 38, 16. पीतैर्निवासिता वस्त्रैः gekleidet in 5, 27, 22. नानाकर्म<sup>o</sup> so v. a. beschäftigt mit MBh. 13, 1285. Vgl. निवास (आच्छादने) Dhātup. 33, 33 und 2. निवासन.

— प्रतिनि s. प्रतिनिवासन.

— संनि umthun, anlegen: प्रावारान् MBh. 3, 745.

— परि 1) anziehen RV. 3, 1, 5. — 2) umgeben, um Etwas her sein: अक्षुरात्रे परि सूर्यं वसने AV. 13, 2, 22.

— प्र anziehen, umnehmen: मृगाजिने प्रवस्ते R. 2, 100, 30.

— प्रति dass.: स ई रेभो न प्रति वस्त उस्त्राः RV. 6, 3, 3. — caus. sich hüllen in (instr.): अजिनेः प्रतिवासितः MBh. 2, 2469. 2502. 3, 11362. 3, 930. 2147. 9, 1792.

— वि 1) die Kleider tauschen: वाससी इव विवसनी ये चरावः TS. 1, 5, 10, 1. ँ. G. 2, 3, 10. — 2) anziehen, umlegen: मनोरमे न व्यवसिष्ट वस्त्रे BH. 3, 20. — caus. anziehen, umlegen: विवास्यन्तां हुरुचर्माणि MBh. 2, 2320.

— सम् sich kleiden in: सम्प्रेण वस्त पर्वतासः RV. 5, 85, 4.

— अभिसम् umnehmen: समानं तत्तुमभिसंवसनी AV. 12, 3, 52.

4. वस् (= 3. वस्) adj. am Ende eines comp. gekleidet in: प्रेतचीवर<sup>o</sup> Ragh. 11, 16.

3. वस् वसति (निवास) Dhātup. 23, 36. उवास, ऊषतुम् P. 6, 1, 15. 8, 3, 60. Vop. 8, 141. 3, 34. ऊषिवंस् P. 3, 2, 108. ऊषुषाम् BH. 6, 135. अवात्सीत्, अवात्ताम् Vop. 8, 141. अवास्तम् Kāṇḍ. Up. 8, 7, 3. वत्स्यति (वसिष्यति) Bhāg. 12, 8. R. 1, 48, 30. 2, 30, 39. so ist wohl auch Çat. 14, 140 zu lesen) P. 7, 4, 49. वस्ता Kār. 6. 9 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. उपित्वा P. 1, 2, 7. 7, 2, 52. Vop. 26, 102. 204. episch उष्ठा (MBh. 3, 4077.

Mār. P. 44, 13) und उष्य; वस्तुम्; pass. उष्यते; उषित P. 7, 2, 52. 8, 3, 60. Vop. 26, 102. aus metrischen Rücksichten in der klassischen Sprache häufig auch med.; in der älteren Sprache vom simpl. med. nur partic. perf.: वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा (या गतम्) verweilend oder verweilt habend RV. 1, 46, 13; und auch an dieser Stelle sind andere Erklärungen möglich. Medialformen in der älteren Sprache s. u. सम्. 1) an einem Orte bleiben, Halt machen, übernachten; verweilen, sich aufhalten, wohnen; stehen bleiben bei Etwas: कुहभिपित्वं कर्तुः कुहोषतुः wo übernachtet ihr? RV. 10, 40, 2. वसन्नरण्यान् 146, 4. शिरिणायां चिदकुना महेभिर्परिवृतो वसति प्रचेताः 2, 10, 3. मा मे ऽद्येशायां वात्सीत् bleibe keine Nacht länger in meinem Besitz Çat. Br. 5, 3, 1, 13. मन्त्रेषु 14, 6, 2, 1. गन्धर्वेषु Ait. Br. 1, 28. नेत्रेवासिं लोके ज्योगिव वसेयुः sich nicht zu lange aufhalten 4, 21. तदभ्यारभ्य वसति inne halten 3, 10. क्व भगवो ऽवात्सीः wo bist du so lange gewesen? 8, 24. कस्यां देवतायां वसत्र bei welcher Gottheit stehet ihr? Çat. Br. 12, 1, 3, 22. इयं विद्या न ब्राह्मणा उवास nahm nicht Auf-enthalt 14, 9, 1, 11. ते ऽस्माद्विष्वम्नो ऽपप्रयति gehen weiter, nachdem sie über Nacht geblieben sind 12, 4, 7. चन्द्रमा नत्तरे वसति 10, 3, 4, 17. रात्रिम् 1, 6, 4, 5. Çāṅkh. Çr. 18, 23, 21. ँ. G. 1, 7, 21. 3, 9, 3. mit Auslassung von रात्रि Nacht: यत्र दशोषिवा प्रयाति nach zehnmaligem Uebernachten TS. 3, 4, 10, 2. अरण्ये तिष्ठो वसति Pāṇāv. Br. 16, 6, 3. 7. यो वनस्पतिधवसत् die Nacht, welche er in den Bäumen zubrachte, TS. 6, 2, 8, 4. — उवास सार्धः सुमहान्वेलामासाद्य पश्चिमाम् machte Halt für die Nacht MBh. 3, 2536. वसति तत्र मार्गस्थाः सुरम्ये नगसत्तमे übernachten 12, 5808. 13, 1409. R. 2, 38, 4. Kathās. 3, 54. 56. Rīcā-Tar. 4, 219. इहैवाद्य वसावहे R. 2, 30, 12. श्वस्तु गतासि तं देशं वसाद्य सह म-न्त्रिभिः übernachtete 90, 23. नास्यानम्रगृहे वसेत् M. 3, 105. 100. 4, 29. चित्तय तावत् केनापदेशेन सकृदप्याश्रमे वसामः Çik. 27, 2. Unterschied der Bedeutung von aor. und imperf. P. 3, 2, 110. Vārt. तामवसं प्रीतो र-जनीं तत्र die Nacht zubringen MBh. 3, 11991. रात्रिं कथयन्तौ पुरातनम् — ऊषतुः 3004. 3, 6011. R. 1, 33, 1. 68, 18. 2, 34, 34. 46, 10. 89, 6. R. Gorr. 1, 71, 25. fg. Kathās. 18, 255. 23, 62. 42, 50. इह कामाश्रमे राम सुखं वत्स्या-महे निशाम् R. 1, 25, 17. 76, 14. R. Gorr. 1, 48, 21. तत्र तामुषित्वैकां रज-नीम् MBh. 3, 11025 (S. 370). R. 1, 9, 51. 31, 30. 2, 54, 1. BH. 3, 43. तां रजनीमुष्य R. 1, 29, 1. 48, 8. 2, 13, 1. वत्स्यत्येकां निशो साकं मया चेत् Ka-ṭhās. 43, 81. Bhāg. P. 9, 14, 39. एकाहं चोदके वसेत् M. 11, 137. स तथा बाह्यतः सार्धं त्रिरात्रं नैषधो ऽवसत् MBh. 3, 2303. सो ऽद्य रात्रौ वसतु तद्गृहे Kathās. 18, 322. 42, 62. वसस्व मयि bleibe bei mir MBh. 3, 2596. 2252. 2598. 2638. 2640. 2842. गुरौ M. 2, 164. 175. 4, 1. गुरुकुले वसति स्म, स तत्र वसमानः MBh. 1, 749. Itih. bei Sā. zu RV. 1, 123, 1. ब्रह्म-कुले Bhāg. P. 1, 6, 8. मातृकुले BH. 3, 24. मासाहर्षं न वस्तव्यं वसन्व-ध्यो भवेन्मम so v. a. ausbleiben, wegbleiben R. 4, 41, 77. गृहे sich auf-halten, wohnen, leben M. 3, 71. 4, 60. 252. 3, 102. 169. वने 6, 1. 28. fg. 11, 72. विषये 7, 133. एवं सह वसेयुर्वा पृथग्वा 9, 111. शैलेषूपवनेषु च 10, 50. ह्रतरि ग्रामात् 11, 128. तावत्पद्मसहस्राणि तत्कर्ता नरके वसेत् 207. तथा तु तेषां वसतो तस्मिन्नाष्ट्रे MBh. 1, 6109. 3, 1790. निषेधेषु 2255. सुखं वत्स्यति नो गृहे 2332. रम्यमावसथं तत्र कृत्वा रामः सलत्तमः । उवास सीतया सार्धम् R. 1, 1, 31. तस्यां वसत्यां वर्षाणि पञ्च पञ्च च — विश्रामि-